Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.4152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 5 | January – 2017

होशंगाबाद शहर का गौरवशाली व्यक्तित्व – पंडित जगन्नाथप्रसाद मिश्रा

डॉ. निशा रिछारिया[1] , डॉ. स्मिता रिछारिया[2]
[1]शा. गृह विज्ञान महाविद्यालय, होशंगाबाद (म. प्र.)

शोध सारांश –
पतित पावनी मां नर्मदा तट पर बसे होशंगाबाद की अपनी एक अलग पहचान व विशेषता है एक बार जो व्यक्ति इस शहर मे आया वह यहीं का होकर रह गया। विन्ध्याचल की सुरम्य श्रंखला के दक्षिण की ओर बसी इस धार्मिक और शांतिप्रिय नगरी मे जब मेरे दादा ''स्व. पं. रायबहादुर जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा'' जी यहां आये तो वे यहीं आकर बस गए।नवल किशोर प्रेस लखनउ से प्रकाशित सन् १९१२ से **suppliment to whos who in india** के **popular edition** जो अभी भी जीर्ण-शीर्ण हालत मे उपलब्ध है) से प्राप्त जानकारी के अनुसार पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा जी के पिता श्री गोविन्दराम मिश्रा जी १७५० में झांसी छोड़कर सागर में बस गये थे। सागर मे ही पं. जगन्नाथ जी का जन्म ३० दिसंबर १८५४ को हुआ था। श्री गोविन्दराम जी सागर जिले के संभ्रांत जमींदार एवं बेंकर थे। सागर छोड़कर फिर हमारा परिवार होशंगाबाद आकर बस गया और पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा जी ने अपनी कर्मभूमि होशंगाबाद को बनाया

मुख्यबिन्दु – द इम्पेरिअल कोरोनेशन दरबार ''रायबहादुर '', फोर्ड कंपनी,हरिहर भोले भगवान

प्रस्तावना –

पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा जीराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रतिस्ठित व नामी वकील होने के साथ साथ बड़े जमींदार, उधोगपति व बहुत बड़े समाजसेवी थे उनके पास कारखाने, तेल के गोदाम व होशंगाबाद, रायपुर (छग) व नागपुर में बड़ी तादात में जमीनें थी ग्राम रैपुरा की अधिकांश भूमि उन्ही की थी। होशंगाबाद में उन्होंने एक विशाल बंगला बनबाया था जिसके इंटीरियर में कई दुर्लभ व बेशकीमती वस्तुओं का प्रयोग हुआ था। उनके बगीचे में गौशाला और अस्तबल था। बंगले के एक बड़े हॉल (३००० वर्गफीट) में एक विशाल ग्रंथालय था जिसमें उस समय का भारत का केस इंडेक्स व विश्वकोष (एनसाइक्लोपिडिया) के अतिरिक्त वकालात व अन्य विषयों की दुर्लभ किताबें थीं।पं. जगन्नाथ प्रसाद जी की आय का एक बड़ा हिस्सा धार्मिक व सामजिक कार्यो में खर्च होता था। इनके परिसर में वर्ष भर निशुल्क भोजन की व्यवस्था थी तथा यहां गरीब कन्याओं का विवाह पूरी शानों-शौकत से कराया जाता था। आजादी के लिए संधर्ष कर रहे व्यक्तियों की यथा संभव मदद की जाती थी। इसके अतिरिक्त हर रविवार को मेरी परआजी एवम् पंड़ित जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा जी की पत्नि परिसर में बैठकर आम लोगों की मूलभूत समस्याओं जैसे अर्थिक तंगी, आवास, इलाज, शादी बगैरह का समाधान अपने स्वंय के खर्च से करती थीं। मिश्रा जी ने शहर के विकास में भी बहुत योगदान दिया वे होशंगाबाद नगरपालिका के प्रथम अध्यक्ष थे ये अवधि थी १९०८ से १९१३ इसके बाद पुनः १९२१ में उन्हें अध्यक्ष बनाया गया। नगर पालिका में मौजूदा रिकार्ड के अलावा २० नंबबर २००९ के दौरान भास्कर संस्करण में यह जानकारी प्रकाशित की गई हैं। उन्होंने जिला चिकित्सालय में फेमिली वार्ड बनवाने के लिए दान दिया था यह वार्ड वर्तमान में जिला चिकित्सालय होशंगाबाद में उपयोग में लाया जा रहा हैं जिसका उल्लेख इस प्रकार हैं।-**"**rai sahib jagannath prasad mishra hoshangabad. the cheif commissioner desires to acknowledge the liberality shown by raisahib jagannath prasad mishra pleader hoshangabad in giving donation of rs 2000/- for the construction of a family ward at bowie hospital hoshangabad. दिसंबर1911 में **"**The Imperial coronation durbar delhi के आयोजन में इन्हें अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया इसी दरबार में उन्हें ''रायबहादुर '' की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसके पूर्व उन्हें राय साहिब की उपाधि मिल चुकी थी। लखनऊ की पुस्तक के अंश से **"**The Rai sahib is one of the leading lawer of h'bad and is always to the fore in movements for the public welfare his liberality and public sprit are well known to the locality his title was confirred on the occasion of the recent cornation durbar is recogination of his public sesvice the imperial cornation durbar dethi में आमंत्रित अतिथियों के परिचय छापे गए थे जिसके अनुसार –**"**pandit jagannath prasad mishra landholder and

pleader municipal president hoshangabad central province was born in a respecteble brahmin family at sagar on 30th dec. 1854 a.d. in 1874 he passed the entrance examination obtaining first place in the 1st division in the provincial list there by wining the prize awarded by the administration. he passed his f.a. in 1876 & won two scholarships one from central provinces & the other from the medical collage calcutta to prosecute his study at the college but owing to unavoidable circumstances. he could not join the college having served government in different capacities he passed the local pleader. since 1883 he is at hoshangabad a leading citizen well known for his industry liberality and public sprit"

मिश्रा परिवार में होशंगाबाद जिले की प्रथम तथा फोर्ड कंपनी की चौथी कार आई थी जिसके लिए ड्राइवर भोपाल नबाब द्वारा भेजा गया था। परिसर में सभी कर्मचारियों के लिए सुंदर आवास थे तनख्वाहके अतिरिक्त उनके पारिवारिक खर्च मिश्रा जी उठाते थे। ड्राइवर जिन्हें आदर से ड्राइवर कक्का कहकर बुलाया जाता था उनकी शादी यहीं करवाई गई थी उनकी पत्नी ड्राइवरनी काकी काफी लंबे समय तक परिवार के साथ रहीं इनकी बेटियॉ जबलपुर में हैं।

पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा जी के दो पुत्र थे। श्री रेवा प्रसाद मिश्रा एवं श्री नर्मदा प्रसाद मिश्रा। इनमें से श्री रेवा प्रसाद मिश्रा को वकालात (बैरिस्टर) की पढ़ाई करने इंग्लेण्ड भेजा गया था। जब उनकी पढ़ाई समाप्त हुई तब तक विश्व युद्ध छिड़ चुका था ऐसी स्थिति में वे इंग्लेण्ड में फंस गए थे उस समय सारे जहाज बंद हो गए थे सिर्फ रानी विक्टोरिया का जहाज चल सकता था। इस स्थिति में पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रा जी ने पंचम जार्ज की सहायता से रानी विक्टोरिया से संपर्क किया था और अपने पुत्र रेवा प्रसाद मिश्रा को रानी के जहाज से सकुशल भारत बुलवाया था। मिश्राजी की ख्याति इतनी थी कि देश के नामी-गिरामी लोग वकालात के सिलसिले में अक्सर होशंगाबाद आया करते थे। स्वंय पं. मोतीलाल नेहरू जी भी एक केस के सिलसिले में मिश्राजी के घर पर दो-तीन बार आए थे।

इनमें सबसे विशेष बात यह है कि मेरे परआजा के पुण्यकार्यो का फल हमारे परिवार को धूनी वाले दादाजी के आर्शीवाद के रूप में मिला। श्री दादाजी हरिहर भोले भगवान जिन्हें छोटे दादाजी कहा जाता हैं अपने ऊपर चल रहे एक केस के सिलसिले में होशंगाबाद आए थे। उन्होंने मिश्रा निवास में ही अपनी धुनी रमाई थी यह सन१९३० से १९३५-३६ का समय था । केस दादाजी के खिलाफ था। खण्डवा दादा दरबार में अंग्रेज अधिकारी जूते पहन कर प्रवेश कर गए थे जिससे दादाजी के अनुयायियों व अधिकारियों के बीच बड़ा विवाद हुआ था। हुकुमत अंग्रेजो की थी इसलिए केस को बहुत बड़ा बनाया गया था इस केस में दादाजी (धुनीवाले) विजयी हुए थे, यह केस अब तक लड़े गए केसों में सबसे बड़ा केस हैं इसकी लगभग २००० प्रतियॉ जबलपुर हाईकोर्ट में सुरक्षित है। इस केस में गांधी जी के कुछ लेटर भी दादाजी के पक्ष में लगाए गए थे।

जिस दिन फैसला आया और दादाजी विजयी हुए उस दिन होशंगाबाद में एक भव्य जूलूस निकाला गया जो कोर्ट से मिश्रा निवास तक गया इस जूलूस में दादाजी के हजारों अनुयायियों के साथ हाथी, घोड़ा, बेंडढोलक सभी कुछ था। इस विजय यात्रा का समापन मिश्रा निवास पर हुआ जिसके चश्मदीद आज भी हैं। दादाजी ने इसी दिन मिश्रा निवास को विजय स्थल घोषित कर यहॉ एक विजय स्तंभ की स्थापना की थी। तथा दादाजी ने इसी दिन अपनी कुछ अमूल्य वस्तुएं परिवार को प्रदान की थी जिसमें उनकी टोपी, आसनी और डण्डा प्रमुख हैं। दादाजी के द्वारा दिया गया डंडा आज भी हमारे मंदिर की शोभा हैं। धुनी वाले दादा जी हमारे यहॉ लगभग चार वर्ष रहे जिससे यहां की दिव्यता और भव्यता और भी बढ़ गई थी। दादाजी के चमत्कारों की एक लंबी श्रंखला है इनमें से कुछ घटनाएं इस प्रकार हैं-

एक बार दादाजी अखण्ड हवन करवा रहे थे यह हवन घी और शक्कर से हुआ था साक्षी (जिसमें मेरा परिवार भी शमिल हैं) बताते हैं कि यह हवन पूरे एक ट्रक शक्कर से हुआ था हवन के दौरान एक रात लोंगों को आभास हुआ कि घी कम पड़ सकता हैं। ये बात दादाजी तक पहुची तो उन्होने कहा कि ''काहे की चिंता है जाओ नर्मदा माई से मांग लाओ और कहना कि जितना ले जा रहे मां उतना वापस भी करेंगे। तो रात में ही पीपों में भरकर नर्मदा जल लाया गया जो दादाजी के स्पर्श से घी में तब्दील हो गया और अगले दिन सुबह उतना ही घी नर्मदा जी में विसर्जित किया गया।

दूसरी घटना है कि एक महिला अपने मृत बच्चे को लेकर आई और विलाप करने लगी। दादाजी ने बच्चे को लेकर जलती हुई धूनी में डाल दिया लोग कुछ समझ पाते इससे पूर्व ही उन्होने धूनी से जीवित बालक निकाल कर महिला की गोद में डाल दिया । ये बालक भावसार बाबा थे जो आगे चलकर काली जी और दादाजी के अनन्य भक्त हुए।

तीसरी घटना है कि मेरी बड़ी बहिन श्रीमती गिरिजा पटेरिया अपनी ससुराल नरसिंहपुर जा रहीं थी उन्होने दादाजी को प्रणाम किया तो दादाजी ने कहां कि '' बहुत दूर जा रही हैं बेटी'' इस पर मेरी बहिन ने कहा कि दूर कहां है दादाजी नरसिंहपुर तो पास ही हैं आप जब भी बुलाएंगे आ जाऊंगी। तब दादाजी ने कहा कि नहीं बेटा तू अब मेरे बुलाने से भी नहीं आ पाएगी। मेरे परिवार को तब कुछ समझ नहीं आया पर वहां नरसिंहपुर पहुॅच कर कुछ समय बाद उनका देहांत हो गया।

चौथी घटना है एक रात मेरी माताजी को बुलाकर दादाजी ने डांटते हुए कहा कि मायके की कुछ चिंता है के नाहीं ये ले जल और छिड़क सब जगह इतना कहकर उन्होंने कुछ क्षेत्र में नर्मदा जल सिंचवाया। कुछ दिन बाद पता चला

कि उसी रात ननिहाल में भयानक आग लगी थी किंतु आश्चर्यजनक रूप से उतना ही हिस्सा आगजनी से बचा था जितने में दादाजी ने जल छिड़कवाया था।

पांचवी घटना है कि एक अंग्रेज अधिकारी पत्नि सहित दादाजी के दर्शन के लिए आए और उन्होंने एक बेशकीमती शॉल दादाजी को भेंट किया। दादाजी ने वह शॉल धूनी में जला दिया यह देखकर उनकी पत्नि को बहुत बुरा लगा दादाजी ने कहां ''बेटी मेरी सारी चीजें धूनी मांई को ही समर्पित है पर लगता है तुझे मां को नहीं देना है इतना कहकर उन्होने जलती धूनी में हाथ डालकर राख हो चुके शॉल को पुनः उसी पूर्व अवस्था में निकाल कर उन्हें वापस कर दिया। यह देखकर दोनों पति-पत्नि बहुत शमिन्दा हुए और उन्होंने माफी मांगी।

इस तरह जब तक दादाजी हमारे निवास में यहां नित-नए चमत्कार होते रहे सभी का वर्णन संभव नहीं हैं। होशंगाबाद से दादाजी खण्डवा चले गए थें जहां अभी धूनी वाले दादाजी का (छोटे व बड़े दादाजी) भव्य मंदिर व समाधि हैं।

दादाजी के जाने के बाद यहां गादी पर आंवलीघाट वाले दादाजी श्री दुर्गानंद जी महाराज सेवा में रहे। मंदिर में अखण्ड कीर्तन व नियमित भंडारा १९७२ तक चलता रहा। १९७३ की प्रलयंकारी बाढ़ में हमारे बंगले सहित सभी कुछ ध्वस्त हो गया। अधिकांश उपलब्ध जानकारी बाढ़ की विभीषिका में नष्ट हो चुकी है किंतु फिर भी कुछ दस्तावेज, फोटोग्राफ दादाजी की कुछ अमूल्य वस्तुएं हमारे पास सुरक्षित हैं। मंदिर का पुनर्निमाण हो चुका है मेरा परिवार धूनी वाले दादाजी का भक्त हैं। हम यथा संभव सेवा कर रहे हैं।

'शोध-प्रविधि – इस 'शोध पत्र में 'शोध प्रविधि के अंतर्गत एवं द्वितीयक श्रीतोके साथ-साथ साक्षात्कार विधि का उपयोग एवं दुर्लभ साक्ष्य एकत्रित कर होशंगाबाद के इतिहास को एकनई दिशा प्रदान करने का सार्थक प्रयास किया गया हैं।

निष्कर्ष – विषय उपयोगी होने के बाद भी क्षेत्रीयय इतिहासकों की कलम से अब तक अछुता रहा आवशयकता थी इसे समेटाने की और प्रकाश में लाने की जिससे इतिहास की कड़ी में इस नए अध्याय को भी जोड़ा जा सके। 'शहर के कुछ लेखकों ने समय समय पर इसे पिरोने का प्रयास अवश्य किया पर पुर्णतः सार्थकता प्रदान नहीं कर पाए एक बार पुनः यह प्रयास इस 'शोध पत्र के माध्यम से किया जा रहा हैं। पंडित जगन्नाथ मिश्रा जी एक विद्वान वकील और कर्मठ कार्यकर्ता थे उन्होंने अपने 'शहर होशंगाबाद के लिए अनेक सौगाते दी। साक्ष्यों को एकत्रित करने के लिए बसंत टाकीज के पास स्थित मिश्रा निवास जहां आज भी मिश्रा जी का परिवार मौजूद है के साक्षात्कार द्वारा विषय के समस्त पहलुओं को जानने का प्रयास किया गया। मिश्रा जी के जीवनकाल से सम्बंधित कई घटनाओं के साक्ष्य यहॉ मौजूद हैं जो अपने इतिहास की गाथा गा रहे हैं। १९७३ की बाढ़ ने कई साक्ष्यों को नष्ट भी कर दिया हैं पर 'शेष बचे साक्ष्य भी काफी है इस इतिहास की कड़ी को आगे ले जाने के लिए।

संदर्भ सूची –

provinces Gazetle pluck office Karachi,"Page -460&461 this text in" from the Imperial cornation Durpar (illustrated) Delhi-1911-VOL-1 Published and compiled by Imperial Publishing co.(khosla Bros Lahore Panjab) Printed at the addision press madras.

साक्षात्कार – श्री तेजेश्वर प्रसाद मिश्र, मिश्रा बंगला, बसंत टॉकीज के पास होशंगाबाद
उपलब्ध साक्ष्य

रायबहादुर की उपाधि

मेडल अवार्ड (पंडित जे पी मिश्रा)

होशंगाबाद की पहली कार

(पंडितजे.पी.मिश्रा एवं उनका परिवार)

पंडित जे पी मिश्रा एवं उनका परिवार

राय बहादुर पं. जगन्नाथ मिश्रा

श्री धुनी वाले छोटे दादाजी

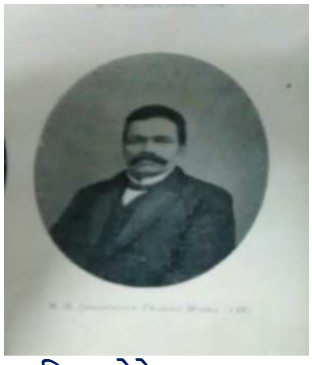

पं. जे पी मिश्रा हरिहर भोले भगवान